"नारी की आवाज़"

चीख रही थी आज फिर, सुबह की सुर्ख अख़बार! !
ऐसा लगता था, की सफ़ेद कागज़ पर लाल स्याही से, छापी हुई थी वो ख़बरें
न जाने किसके रक्त से सींची हुई थीं उन चीखों की कब्रें...

दिल को दहलाने वाली ख़बरों की भरमार,
एक औरत के साथ आज फिरसे हुई छेड़ छाड़
कुछ खून, कुछ घरेलु अत्याचार और यह क्या ? एक छोटी से बच्ची के साथ
घिनोना बलात्कार ?

पर इसमें नया क्या था? यही तो चिल्लाती है रोज़ की अखबार

और आज फिर, बंद कर लिए थे सबने अपने किवाड़
न देखि, न सुनी, उस मासूम की दर्द भरी पुकार
बस, चलता रहा जीवन का, नोट कमाना का दैनिक कारोबार

हाँ बातें खूब हुई, चर्चे खूब हुए...सबने कहा दिलायेंगे नारी को पुरे अधिकार
मन लिया नारी दिवस, हुआ तालियों का शोर भरमार
मगर, निराशा की बात यह है, की फिर नयी सुबह आई, और छपा एक नया अ
खबार

वही इज्ज़त का खेल सुर्ख़ियों को रंगता रहा
बेपरवाह मुखोटों से समाज का चेहरा सजता गया...

गूँज गूँज के यह खबरें वापस उन्ही कागज़ी करवटों में सिमट जाती हैं...
शायद इन्ही रक्तोषित पन्नों से ,वो नारी अपनी इज्ज़त पे पर्दा करके, सर उ
ठा के जीने की कोशिश करती है...

काले अक्षरों पे आज भी उसके दर्द की लाल छीटें थी
मगर इंसानियत, आज भी आँखें मेची थी....

इस सन्नाटे को ज़रूरत है तुम्हारी आवाज़ की
ए इंसान, करो हिफाज़त, इस जन्ननी की लाज की...

#नीतिबंगा , नयी दिल्ली

.....

" माँ "

सिर्फ़ एक माँ की समझ सकती है
वो ख़ुशी
वो उम्मीद
जो बच्चे की पहली किलकारी पर वो महसूस करती है
उसे पहली बार सीने से लगा कर ... बस कुछ अधूरा सा, पूरा हो जाता है ...

सिर्फ़ माँ ही समझ सकती सकती है
वो बेचैनी
वो तड़पन
जब उसका अंश, किसी दर्द को महसूस करे
चाहे छींक, या बुखार
बस.. माँ की ममता में झलकता है प्यार

सिर्फ़ एक माँ ही समझ सकती है
वो बेचैनी

वो फ़िक्र
जब तक उसकी संतान घर नहीं आ जाती रात को
काम से ..पार्टी से ...कहीं से भी !
बस... वो दरवाज़े की दस्तक होती है और साँस में साँस आती है

सिर्फ़ माँ ही समझ सकती है
वो शान
वो अभिमान
जब उसकी औलाद अपने सपनों को पा लेती है
मेहनत से अपनी मंज़िल के क़रीब आती है
बस.. उसके जुनून से माँ को मिलता है सुकून...

हाँ यह सच है , की इस संसार
में बस .. सिर्फ़ माँ ही ये समझ सकती है...

तो समझो तुम भी
उस माँ को
उसे बस एक प्यास है
तेरे प्यार, तेरे साथ की तलाश है
कुछ हँसी, कुछ ग़म, मिल बाँट लो
भर लो आज बाहों में
रख दो आज , अपने प्यार के फूल
चुन चुन कर, उसकी राहों में...

#नीतिबाँगा